कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



सूफ़ीवाद और तसव्वुफ़

सूफ़ीवाद उन्नीसवीं शताब्दी में मुद्रित एक अंग्रेज़ी शब्द है। इस सूफ़ीवाद के लिए इस्लामी ग्रंथों में जिस शब्द का इस्तेमाल होता है वह है तसव्वुफ़ (कल्पना, विचार, ख्याल)।

कुछ विद्वानों के अनुसार यह शब्द 'सूफ' से निकलता है जिसका अर्थ ऊन है। यह उस खुरदुरे ऊनी कपड़े की ओर इशारा करता है जिसे सूफ़ी पहनते थे।

अन्य विद्वान इस शब्द की व्युत्पत्ति 'सफ़ा' से मानते हैं जिसका अर्थ है साफ़ (पवित्र)। यह भी संभव है कि यह शब्द 'सफ़ा' से निकला हो जो पैगम्बर की मस्जिद के बाहर एक चबूतरा था जहाँ निकट अनुयायियों की मंडली धर्म के बारे में जानने के लिए इकट्ठी होती थी।

सूफ़ीमत का विकास

- इस्लाम की आरंभिक शताब्दियों में कुछ लोगों का रहस्यवाद और वैराग्य की ओर झुकाव बढ़ा, इन्हें सूफ़ी कहा जाने लगा।
- इन लोगों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की।
- उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।
- उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल (आदर्श मानव) बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी।
- सूफ़ियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

खानकाह और सिलसिला :

- ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते सूफीवाद एक पूर्ण विकसित आन्दोलन था।
- सूफी अपने को एक संगठित समुदाय-खानकाह के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे।
- खानकाह का नियंत्रण शेख/ पीर अथवा मुर्शीद के हाथ में था।
- वे अनुयायियों की भर्ती करते थे और अपने वारिस (खलीफा) की नियुक्ति करते थे।

सूफी शब्दावली

- खानकाह – सूफी संत का आध्यात्मिक क्षेत्र (आश्रम)
- शेख / पीर – गुरु
- मुर्शीद – शिष्य
- वारिस / खलीफा – उत्तराधिकारी
- 12 वीं शताब्दी के आस-पास सूफी सिलसिलों का गठन होने लगा था।
- सिलसिले का अर्थ :- सिलसिले का शाब्दिक अर्थ है, जंजीर जो शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते की घोतक है जिसकी पहली अटूट कड़ी पैगम्बर मोहम्मद से जुड़ी है।
- पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह उसके मुरीदों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी।
- इस तरह पीर की दरगाह पर जियारत के लिए जाने की खासतौर से उनकी बरसती के अवसर पर, परिपाटी चल निकली।
- इस परिपाटी को उर्स (पीर की आत्मा का ईश्वर से मिलन) कहा जाता था।
- इस तरह शेख का वली के रुप में आदर करने की परिपाटी शुरु हुई।

सिलसिलों के नाम

ज़्यादातर सूफी वंश उन्हें स्थापित करने वालों के नाम पर पड़े। उदाहरणत:, कादरी सिलसिला शेख अब्दुल कादिर जिलानी के नाम पर पड़ा। कुछ अन्य सिलसिलों का नामकरण उनके जन्मस्थान पर हुआ जैसे चिश्ती नाम मध्य अफगानिस्तान के चिश्ती शहर से लिया गया।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

ख़ानक़ाह के बाहर

- कुछ रहस्यवादियों ने सूफ़ी सिद्धांतों की मौलिक व्याख्या के आधार पर नवीन आंदोलनों की नींव रखी।
- ख़ानक़ाह का तिरस्कार करके यह रहस्यवादी, फकीर की ज़िंदगी बिताते थे।
- निर्धनता और ब्रह्मचर्य को उन्होंने गौरव प्रदान किया। इन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता था– कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी इत्यादि।
- शरिया की अवहेलना करने के कारण उन्हें बे-शरिया कहा जाता था।
- इस तरह उन्हें शरिया का पालन करने वाले (बा-शरिया) सूफ़ियों से अलग करके देखा जाता था।

उपमहाद्वीप में चिश्ती सिलसिला

- बारहवीं शताब्दी के अंत में भारत आने वाले सूफ़ी समुदायों में चिश्ती सबसे अधिक प्रभावशाली रहे।
- कारण :

1. इन्होंने अपने आपको स्थानीय परिवेश में अच्छी तरह ढाला और
2. भारतीय भक्ति परंपरा की कई विशिष्टताओं को भी अपनाया।

चिश्ती सिलसिले के मुख्य उपदेशक

सूफ़ी	मृत्यु का वर्ष	दरगाह का स्थान
शेख मुइनुद्दीन चिश्ती	1235	अजमेर (राजस्थान)
ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी	1235	दिल्ली
शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर	1265	अजोधन (पाकिस्तान)
शेख निज़ामुद्दीन औलिया	1325	दिल्ली
शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहली	1356	दिल्ली

चिश्ती ख़ानक़ाह में जीवन

- ख़ानक़ाह सामाजिक जीवन का केंद्र बिंदु था।
- शेख निज़ामुद्दीन औलिया (चौदहवीं शताब्दी) का ख़ानक़ाह दिल्ली शहर की बाहरी सीमा पर यमुना नदी के किनारे ग़ियासपुर में था।



Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- यहाँ कई छोटे-छोटे कमरे और एक बड़ा हाल (जमातख़ाना) था जहाँ सहवासी और अतिथि रहते, और उपासना करते थे।
- सहवासियों में शेख का अपना परिवार, सेवक और अनुयायी थे।
- शेख एक छोटे कमरे में छत पर रहते थे जहाँ वह मेहमानों से सुबह-शाम मिला करते थे।
- एक बार मंगोल आक्रमण के समय पड़ोसी क्षेत्र के लोगों ने ख़ानक़ाह में शरण ली।
- यहाँ एक सामुदायिक रसोई (लंगर) फ़ुतूह (बिना माँगी खैरात) पर चलती थी।
- सुबह से देर रात तक सब तबके के लोग–सिपाही, गुलाम, गायक, व्यापारी, कवि, राहगीर, धनी और निर्धन, हिंदू जोगी और कलंदर यहाँ अनुयायी बनने, इबादत करने, ताबीज़ लेने अथवा विभिन्न मसलों पर शेख की मध्यस्थता के लिए आते थे।
- कुछ अन्य मिलने वालों में अमीर हसन सिजज़ी और अमीर खुसरो जैसे कवि तथा दरबारी इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बरनी जैसे लोग शामिल थे।
- इन सभी लोगों ने शेख के बारे में लिखा।
- सूफ़ी संतों के द्वारा स्थानीय परंपराओं को आत्मसात करने का प्रयत्न किया गया जैसे-

1. शेख के सामने झुकना
2. मिलने वालों को पानी पिलाना
3. दीक्षितों के सर का मुंडन
4. यौगिक व्यायाम आदि व्यवहार इस तथ्य के घोतक।

- शेख निज़ामुद्दीन ने कई आध्यात्मिक वारिसों का चुनाव किया और उन्हें उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में ख़ानक़ाह स्थापित करने के लिए नियुक्त किया।
- इस वजह से चिश्तियों के उपदेश, व्यवहार और संस्थाएँ तथा शेख का यश चारों ओर फैल गया।
- उनकी तथा उनके आध्यात्मिक पूर्वजों की दरगाह पर अनेक तीर्थयात्री आने लगे।

चिश्ती उपासना : ज़ियारत और क़व्वाली

- अलग-अलग संप्रदायों, वर्गों और समुदायों के लोग महान् चिश्ती संतों की दरगाह पर अपनी आस्था प्रकट करते रहे हैं चिश्तियों में सबसे अधिक पूजनीय दरगाह ख़्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) की है जिन्हें 'ग़रीब नवाज़' कहा जाता है।



LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Guru App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति
PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- यह दरगाह शेख की सदाचारिता और धर्मनिष्ठा तथा उनके आध्यात्मिक वारिसों की महानता और राजसी मेहमानों द्वारा दिए गए प्रश्रय के कारण लोकप्रिय थी।
- मुहम्मद-बिन-तुगलक (1324-51) पहला सुल्तान था जो इस दरगाह पर आया था।
- किंतु शेख की मज़ार पर सबसे पहली इमारत मालवा के सुल्तान गियासुद्दीन खिलजी ने पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बनवाई।
- सोलहवीं शताब्दी तक आते-आते अजमेर की यह दरगाह बहुत ही लोकप्रिय हो गई थी।
- इस दरगाह को जाने वाले तीर्थयात्रियों के भजनों ने ही अकबर को यहाँ आने के लिए प्रेरित किया।



- अकबर यहाँ चौदह बार आया कभी तो साल में दो-तीन बार, कभी नयी जीत के लिए आशीर्वाद लेने अथवा संकल्प की पूर्ति पर या फिर पुत्रों के जन्म पर।
- 1568 में अकबर ने तीर्थयात्रियों के लिए खाना पकाने हेतु एक विशाल देग़ दरगाह को भेंट की। उन्होंने दरगाह के अहाते में एक मस्जिद भी बनवाई।
- नाच और संगीत भी ज़ियारत का हिस्सा थे।
- सूफ़ी संत ज़िक्र (ईश्वर का नाम-जाप) या फिर समा (श्रवण करना) यानी आध्यात्मिक संगीत की महफिल के द्वारा ईश्वर की उपासना में विश्वास रखते थे।

भाषा और संपर्क

- न केवल समा में चिश्तियों ने स्थानीय भाषा को अपनाया अपितु दिल्ली में चिश्ती सिलसिले के लोग हिंदवी में बातचीत करते थे।
- बाबा फरीद (खानकाह-अजोधन, पंजाब) ने भी क्षेत्रीय भाषा में काव्य रचना की जो गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है।
- मलिक मोहम्मद जायसी का प्रेमाख्यान पद्मावत पद्मिनी और चित्तौड़ के राजा रतनसेन की प्रेम कथा के इर्द-गिर्द घूमता है।
- अक्सर ख़ानकाहों में समा के दौरान ऐसे काव्यों का वाचन होता था।
- कुछ और रचनाएँ लोरीनामा और शादीनामा के रूप में लिखी गई।
- लिंगायतों द्वारा लिखे गए कन्नड़ के वचन और पंढरपुर के संतों द्वारा लिखे मराठी के अभंगों ने भी उन पर अपना प्रभाव छोड़ा।

LET'S LEARN TOGETHER
Download
Mission Gyan
App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

सूफ़ी और राज्य

- चिश्ती संप्रदाय की एक और विशेषता संयम और सादगी का जीवन था जिसमें सत्ता से दूर रहने पर बल दिया जाता था।
- सत्ताधारी विशिष्ट वर्ग अगर बिना माँगे अनुदान या भेंट देता था तो सूफ़ी संत उसे स्वीकार करते थे।
- सुल्तानों ने कईबार ख़ानक़ाहों को कर मुक्त (इनाम) भूमि अनुदान में दी।
- चिश्ती धन और सामान के रूप में दान स्वीकार करते थे किंतु इनको सँजोने के बजाय खाने, कपड़े, रहने की व्यवस्था और अनुष्ठानों जैसे समा की महफिलों पर पूरी तरह खर्च कर देते थे।
- इस तरह शेख के नैतिक अधिकार की पुष्टि होती थी और आम लोगों का उनकी ओर झुकाव बढ़ता था।
- सूफ़ी संतों की धर्मनिष्ठा, विद्वता और लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास उनकी लोकप्रियता का कारण था।
- इन वजहों से शासक भी उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे।
- जब तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की तो उलमा द्वारा शरिया लागू किए जाने की माँग को ठुकरा दिया गया।
- क्योंकि सुल्तान जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रजा इस्लाम धर्म मानने वाली नहीं है।
- ऐसे समय सुल्तानों ने सूफ़ी संतों का सहारा लिया जो अपनी आध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्भूत मानते थे जो उलमा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।
- यह भी माना जाता था कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और आध्यात्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं।
- इसलिए शासक अपनी कब्र सूफ़ी दरगाहों और ख़ानक़ाहों के नज़दीक बनाना चाहते थे।
- सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव के उदाहरण भी मौजूद हैं।
- अपनी सत्ता का दावा करने के लिए दोनों ही कुछ आचारों पर बल देते थे जैसे-
  - झुक कर प्रणाम करना ।
  - कदम चूमना ।
- कभी-कभी सूफ़ी शेखों को आडंबरपूर्ण पदवी से संबोधित किया जाता था।
- उदाहरणत - शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी उन्हें सुल्तान-उल-मशखे (अर्थात शेखों में सुल्तान) कह कर संबोधित करते थे।

LET'S LEARN TOGETHER
Download
Mission Gyan
App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here